अपनी रहमत के समंदर में | By Zarnigar Qausar

अपनी रहमत के समंदर में उतर जाने दे
बे-ठिकाना हूँ अज़ल से मुझे घर जाने दे

सू-ए-बत्हा लिए जाती है हवा-ए-बत्हा
बू-ए-दुनिया मुझे गुमराह न कर जाने दे

मौत पर मेरी शहीदों को भी आएगा
उनके क़दमों से लिपट कर मुझे मर जाने दे

ख़्वाहिश-ए-ज़ाद बहुत साथ दिया है मेरा
अब जिधर नेरे मुहम्मद हैं उधर जाने दे

रोके रिज़वा न मुज़फ़्फ़र को दर-ए-जन्नत पर
ये मुहम्मद का है मंज़ूर-ए-नज़र जाने दे

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%85%e0%a4%aa%e0%a4%a8%e0%a5%80-%e0%a4%b0%e0%a4%b9%e0%a4%ae%e0%a4%a4-%e0%a4%95%e0%a5%87-%e0%a4%b8%e0%a4%ae%e0%a4%82%e0%a4%a6%e0%a4%b0-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-by-zarnigar-kausar/